



67

थन के ससर्वनाम मंगल पूजा ॥ थन ऊरु याग सा अग्नि स्रु यन अग्ना रुमि ॥
मया गसा देव पूजा धि विरथ याय ॥ थन पूजा ऊजमान या सक प्रमान प्रस
पचा न जो लं ॥ १ ॥ १०० ॥ ३३३ ॥ १००० ॥ थुमि पूजा जो लं झा पी था प ल पंग
य ॥ थुमि धून काडी झा पी पूजा मद्य धा मनि वाने ॥ ३३ नमो गव ग वज्र ध
न सा ग न प्रम दना थ ग थ ग ना यी ३३ नमो गव ग वज्र ध ॥ ग य था ॥ ३३ व

ऊरु म हा व जी विद्या व ऊरु म हा न जो व ऊरु म हा व धिम सु प्रस कि म नि सर्व क
मो व न ध विर धा ध ने स्वा हा ॥ थुमि प द पा ड ॥ के स र्वा द क न क थू ना डी
हा य ॥ ग्रा का स क र्ति नी ३३ क हा य पूजा जो लं न मु ना क पू या डी थान हा ल
प ॥ ७७ द्वा व थि स्वा र न ना प र्थ क पूजा म धे २ लो ना पि न वि न य ग ॥ ग
सा द के क पूजा ग सा अ प न मि ग पूजा रु लं ल र न ॥ रु न थु रु म रु न पूजा

ग (अधनयायाडं वज्रवक्रं हं रा
जगिगाडं वज्रसूत्रं हं रा। ॥



डांवजासनदुंगाधमूडा

काशी ~~प्र~~ नवजनीधर



थन वजासनमूढानंदवद्याः
महलः श्रद्धिहानयाय॥

॥ ध्वमनुनूँ मस्योदनहायपूः
॥ औवजाननदहपर्वमथरौजनहंकुदू



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

सर्वजगत्सर्व

शिवजावमहा

玆

धनपा
दिश।

ॐ वज्र
कुमल

द्वितीयः

बंधन

मादन

आवेण

आपाद्यप्रणिच स्वाहा ॥ ॐ वज्र धारु मलुस्य देवस्य आभूद्यप्रणिच स्वाहा ॥
 ॐ वज्र धारु मलुल रुदान कद वस्य आभूद्यमनप्रणिच स्वाहा ॥ ॐ वज्र
 धारु मलुल रुदान कद वस्य आभूद्यमनप्रणिच स्वाहा ॥ ॥ धन
 विधिवक्रमन देवपूजा ॥ आकाशधरु कपूजा ऊर्लस कलौपूजा दवि
 पिसिपूजा याकशा लयाजी धमनपूजा गमूडा रावनपूजा याय ॥ ॥

यन हस्त कपन द्वागवर्त मूदान पूजामर्त पूजाने थडा मूडा का नाम मद्य
 मूदान ॥ धन याय ॥ समूद मूडा के काडा धरुग थाप दये ॥ सर्व मद्य
 गम पूषा पूजामद्य समूद मूडा नक्षत्र समय द्रुं ॥ ॥ वज्र पूषा द्रुं ॥ आव
 ज पूषा यमि रुखा हा ॥ ॥ सर्व मद्य गम धूप पूजामद्य समूद मूडा
 नद्य समय द्रुं ॥ ॥ हान मूदान पूषा धिष्णान ॥ ॥ धाष मूडा धरुग

दाहस्तपनाउं वज्रधूपयानां उं आव ऊधूपं प्रणि च स्वाहा ॥ ॥ उं सर्वग
थागन दीप पूजा मेघ समुद्रसू न धं समयहं ॥ ॥ उं वज्रदिप
जीनां उं आव ऊधूपं प्रणि च स्वाहा ॥ ॥ उं सर्वग थागन गन्धपूजा
मेघ समुद्रसू लनं समयहं ॥ उं वज्रगन्धपूजा उं आव ऊधूपं प्रणि च
स्वाहा ॥ ॥ उं सर्वग थागन नगपूजा मेघ समुद्रसू न धं समयहं ॥ ॥

सर्वकृपांशं ज्ञातुं वक्तुं नैविद्यं प्रमिदं स्वाहा ॥ ॥ धनगुलिगपूजा
जालंधुगु कथं धीमा उवाच विष्णुः ॥ अदिपंडितं चालद कायामूदा कायामू
दावाकासीहिनया द्वाडा पूजायाया ॥ ॥ धनलाक्षा घनं वादनसुगिता
उं सर्वे वापिरु वाग्धर्मं सुगमाधिपमं किं नैः ॥ नैः धातुक महा वाजं वैभो च धी
नमस्तुते ॥ ॥ ॐ नमस्तु वक्तुं स्याय वक्तुं न त्राय न नमः ॥ ॐ नमस्तु व

कथं मोय नमस्तु वक्तुं न त्राय न नमः ॥ धनमस्तु नये न त्राय न नमः ॥ ॐ नमस्तु वक्तुं न त्राय न नमः ॥
पञ्चभूतं गिविद्या ॥ ॥ ॐ नमस्तु वक्तुं न त्राय न नमः ॥ ॐ नमस्तु वक्तुं न त्राय न नमः ॥
गपुष्पमस्तु नये न त्राय न नमः ॥ ॐ नमस्तु वक्तुं न त्राय न नमः ॥ ॐ नमस्तु वक्तुं न त्राय न नमः ॥
निर्दयाय नमः ॥ ॥ ॐ नमस्तु वक्तुं न त्राय न नमः ॥ ॐ नमस्तु वक्तुं न त्राय न नमः ॥
ॐ नमस्तु वक्तुं न त्राय न नमः ॥ ॐ नमस्तु वक्तुं न त्राय न नमः ॥ ॐ नमस्तु वक्तुं न त्राय न नमः ॥

261 I
261 I
261 I

धनगर्गः कायवाक्चिह्नं पूजाप्रदानाय आह्वानं निर्योग्यामिराटं सर्वगं य
गं कायवाक्चिह्नं अधिनिष्ठमानं कुरु स्वाहा ॥ धनपुत्राय पूजाप्रति
ष्ठा ॥ सर्वलयास्यकायक ॥ धनमहावलिविजय ॥ वाक्पूजा ॥ पूज्यं ह्यग्निं ॥ अ
सिद्धो देविसर्जने ॥ सग्वनगय ॥ गुणपूजा ॥ इन्द्रा ॥ १० ॥ आह्वानं ॥ विसर्ज
नं ॥ धनमुल्लेखं ह्याय ॥ धनपुत्रिधाना ॥ असमायत्तासर्गं सावधर्मिण

३
४ कनूधामकाजगमिद्वरवहाग्निं ४ असमं न सर्वं धसिद्धिं गायिने ॥ अ
माचगे सवनाय धर्मिण गग ॥ १० ॥ समापमं कना धविद्यं गुरुनसने धूकधि
कपसिमिक ॥ सर्वसर्वधामुचनसिद्धिदायी कविगगापमं पूज्यं असमं
सिद्धिपू ॥ सगगामला ककनूध धगगाग्निं गायनि धानसिद्धिं नदिनाध
धर्मगा जगगार्थसा धनपनासमं कि निसगगाविनाचनिमहा कपात्मकं

ना
नानिनिधनाक्रुन्नयानिकाचनरपुजगमिलोकवयसिद्धिदायिका
ममिगामिमिगमपूससमाकिमंगसुगमिगमपिअहसुधर्मगागिस
मयायसिद्धिवनदानुभवममगायगमिगमासदासकलविशोक
वलसिद्धिदायिका, नाथपियधगमिका, अनात्रगा॥ ॥पदकिदा
मथा॥ ॥आकाशाद्यादविक्रवापदादिनिधनपत्रमहावजसम

यसत्ववजससुप्रसिद्धमवासवीरुममहासिद्धिमहेध्वयोधिदेवगम
वैवजधनोत्राजासिद्धिमपयमाक्रुन्नयानिर्दोषभाठवगध्यासिसर्व
नागानूनागनेशगत्वधिसिद्धिमवनूमहाभागमहागम॥अथक
द्यत्रमोगादिमूकगथागमसमक्रुद्धसर्वोत्सावाधिसत्वपसिद्ध
ममसर्वोत्सममहासिद्धिमाहेध्वयोगमूद्रयासिद्धिवजससकर्मवज

गङ्गायने ममा सर्वं सत्त्वमना व्यापि सर्वं सत्त्वमना विहसि न भव सर्वं सत्त्वमना विहसि
कामाग्रसुमया श्री धर्मधनसुखनसुखमं प्रह्लापा यात्ममकुलं न न सत्य
नेमनाथ कामाग्रपनिपूजयन् ॥ धनश्रुम कृष्णमणिधरकडा
प्रविष्टिद्विद्विद्यविस्तारन्यागसा मयानसागाय श्रुतं सायुर्द्वैतलं
सायुषदयनि ॥ ॥ गमथागायतमकुलं सकलसत्त्वमना विहसि न स्य सर्वं

[illegible]

सुकर्म

वक्रपत्रमाशिक्षके॥ ६ ॥ यद्येव वक्रमत्र वक्रधर्मो वक्रिमूद्रागरघन
सादिगस्य विद्य कस्य वै न च नमः ॥ ७ ॥ वक्रविविनास कस्य गल कूल
वक्रुष्मन्तिकनवाश्री॥ ८ ॥ वक्रवक्रमत्र वक्रकस वक्रपादः
समृद्धिनायकसहितस्य भूमाद्यसिद्धि यत्न कूलं हि न कर्मपत्रमार्थसिद्धि
गलमूलं वक्रुष्मन्तिकनवाश्री॥ ९ ॥ यत्नमूलं भूमिगारुजिन

कुरातमकस्य

सज्जिनप्रदस्य धर्मो केतुना वक्रमहासुखगोचुराशिरनधीनत्स
सुवक्रिनस्य निविधिनस्य गलमगलं वक्रुष्मन्तिकनवाश्री॥ १० ॥
यत्नमूलं कमलपारधसवज्जिह्व वक्रायुधप्रवलेगा वक्रगूढार्मक
स्य लोकध्वजस्य सुगमालस कस्य गलं गलं वक्रुष्मन्तिकनवाश्री॥
१ ॥ यद्यवजलास्य वक्रमार्गं लवज्जीगन्तुस्य यं प्रपद्यन् वक्र

